%%―The Imperial Gaṅgas―

%%A. D. 1190 ― 1435

%%(From 5-2-1310 To 7-4-1353 A.D.)

%% p. 382

NO. 210

Lakshmī-Narasiṃha Temple at Śiṃhāchalaṃ<1>

S. I. I. Vol. VI, No. 1078; A. R. No. 336 of 1899;

I. M. P. Vol. III. P 1683, No. 164

Edited by Dr. K. B. Tripāthi in O. H. R. J. Vol. I,

No. 3, pp. 200-204 ff.

Ś …… (?)

(Oriya)

(१।) श्रीवारादि(धि)वीर श्री वीरभाणुदेवस्य<2> प्रवर्द्धमान विजयराज्य-

(२।) संवत्सरंवुलु ८गु श्राहि मकर कृष्ण ११यु सनिवारमु-

(३।) नांडु [पो]टुनु[रि]कटकाननु कलिगपरीक्ष-पात्र श्रीकोटिनात(थ)प-

(४।) डांकर मांजि समस्त वेहरण विद्यमाने श्रोनरासह नाथ-

(५।) देवंकर सानुसंप्रदायर नट्ट वव्रित्तिकि कल्ला(ला) निव(र्ण्ण)य शिलाशा-

(६।) सन । चित्तनमो वरि उपार्जिञ्चन व्रित्ति नट्टु वापण संस्तु(तु)ष्ट होई अ-

(७।) र्जिहा(ला) न्याये ए व्रित्ति एहारि वडु(ड)वा(भा)इ माडु नट्टुव भडु(ड)भ[उ]-

<1. In the tenth niche of the verandah round the central shrine of this temple.>

<2. Probably he is Bhānudeva-II (A. D. 1308-9—1327-8). His 8th Aṅka fell in A. D. 1314-5. Accordingly, the date of this inscription may be taken as the 12th January, 1314 A. D. Saturday. The 11th tithi started from about the mid-day.>

%%p. 383

(८।) णी कोड्यासानि सानु(न)भइ(उ)णी चिंगासानि ए तिनिकि ए नट्टु वाव्रित्ति ति-

(९।) नि भाग चित्तनमोखरि अर्जिला न्याये एहाकु अधिक भागे सएने करि

(१०।) एहाकु दुइभाग ए पांचभागकि(कु) सवुह(हि) जे जाहार भागे स्राहि स्राहि स-

(११।) द्दिवाँए । एहांकर मुखरिपण व्रिति ए पंचर मध्ये जे खदिशोयि से चतु-

(१२।) वर्तन भोग करिवा के तलराति ब्रस्यमि[ख]न एहांकर विसय अन्यो-

(१३।) न्य लिखनपत्रमान समु(वु) सोदि सर्व्ववादि सप्रीतिपण को(क)ला निन्न(र्ण्ण)य ए-

(१४।) हा पत्र वे[ष]स्था ए सवु हाइ खट्टिवा ए तहिर सर्वसत्व वा-

(१५।) द्धि गेह ए।ए चे(वे)वस्थाकु जे वा अतितुम कल्ले(ले) राल[व]रकु अपराधि हाइ-

(१६।) तोहोर ब्रित्ति अंस तो(को)ष्ण(ष्ट) होइ ए अत्थ[ला]वहि वेवरण साक्षि एहां

(१७।) च्च(क)ई अंश्यकाइं(रं)क शासनं[स]म्मतु(त) । ई न्यायकु स्वामि साक्षि श्री श्री श्री [।।]